दो लव्ज़ ज्यादा

कहानी/शरोवन

***

‘दिल टूटने का कोई शोर या आवाज़ हुआ करती तो कोमल एहसासों के जज़बात चटकते ही सारी दुनियां को पता चल जाया करता कि किस के दिल पर कब कोई गाज़ गिर पड़ी है। मीनल ने जिस तरह से आहिस्ता-आहिस्ता अमलतास के दिल में अपने कदम बढ़ाये थे, ठीक उसके विपरीत वह ऐसा धमाका करके उसके अरमानों पर ठोकर मारती हुई बाहर निकल गई कि अमलतास मूर्ख बना केवल देखता ही रह गया। दिल की कोमल भावनाओं से अपनी नज़ाकत के जरिये मन बहलाने वाली लड़की अपने झूठे प्यार के वास्ते दिखाकर एक भोले-भाले इंसान को क्या देगी? ये बात आज के हरेक युवा को जानने की बहुत आवश्यकता है।’

***

सूर्य की अंतिम दम तोड़ती हुई किरण के साथ ही जब भूख़े बगुले ने अपनी लंबी चोंच से जीवन की भीख़ मांगती हुई तड़पती हुई मछली को भी निगल लिया तो इसके साथ ही डूबती हुई शाम के धुधं्ालके ने अपने पैर लंबे करने आरंभ कर दिये। रत्नागिरि की इस मशहूर झील, झींझ के किनारे बैठे हुये अमलतास को न जाने कितने ही घंटे बीत चुके थे। अपने ही ख्यालों में डूबे और बैठे हुये अमलतास को इस देरी का एहसास तब हुआ जब कि, सूर्य की अंतिम रश्मि भी मजबूर होकर डूब गई और चारों ओर शाम की चादर फैलने लगी थी। झींझ के सारे तट ख़ाली हो चुके थे। मछुआरे अपनी पकड़ी हुई मछलियां समेटकर मछली बाजार में जा चुके थे। अब चारों तरफ वातावरण में शान्ति तो थी, पर इस शान्ति के साथ एक अजीब सी मनहूसियत भी अपने बजूद के साथ बैठी हुई जैसे किसी अन्य मुसीबत को बिख़ेरने का गुणा-भाग कर रही थी। झींझ के तन्हा तटों पर यदाकदा ही कोई दिख जाता था। दूर शहर की विद्युत बत्तियां जल चुकी थीं और इसके साथ ही रात का चौंधि्याता हुआ आलम अपने हुस्न का परवाज़ बन कर उड़ने लगा था।

लेकिन अपने ही विचारों और सोचों में गुम अमलतास को इन सारी बातों की कोई भी चिंता नहीं थी। यूं भी मनुष्य जब अपनी ही सोचों में डूब जाता है तो फिर उसे किसी भी बात का कोई एहसास तक नहीं हो पाता है। अमलतास बैठा हुआ तब से मीनल के बारे में ही सोच रहा था। उस मीनल के बारे में कि जिसकी स्मृतियों के सहारे उसने अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत करने का एक अंतिम निर्णय ले लिया था और जिसकी मौत का ग़म अपने दिल की हसरतों में निचोड़कर वह अब तक जीने की सांसे ले रहा था। वह तो अब तक यही सोचे बैठा था कि तकदीर ने उसके साथ एक खेल खेला था, और इस खेल में मीनल की किस्मत फूटी, और वह सदा के लिये उसे छोड़कर चली गई, पर आज अचानक से जब उसने मीनल को जीवित थाईपाई मशहूर थाई रेस्तरां में किसी अनजान के साथ खाना खाते देखा तो आश्चर्य करके ही रह गया। उसकी ज़िन्दगी के पहले-पहले प्यार का इतना हसीन धोख़ा? वह तो मीनल के प्रति इस छल और चालाकी की कभी झूठे से भी सपने तक में कल्पना नहीं कर सकता था। प्यार के अनजाने रास्तों पर आंंख बंद किये चलने का अंजाम? उसकी मूर्खता, बेबकूफी, दीवानगी, मीनल की चालाकी, छल या स्वार्थ या फिर कोई विवशता? वह कुछ समझ नहीं सका। स्वतः ही अमलतास की आंखों के सामने उसके पिछले वर्षों के दर्दभरे झूठे प्यार के इतिहास के पृष्ठ पलटने आरंभ हो गये . . .।

अरदिल नगर से आनेवाली, यात्रियों से ठसाठस भरी पैसेंजर ट्रेन जैसे ही नीनापाटा के इस छोटे से स्टेशन पर आकर रूकी तो खिड़की के किनारे बैठा हुआ अमलतास यात्रियों का आवागमन देखने लगा। इस स्टेशन से यात्रियों को लेकर यह ट्रेन रत्नागिरि के व्यापारिक शहर को जाती थी। सरकार ने यह गाड़ी विशेषकर उन लोगों की सुविधा के लिये चलाई थी जो छोटे शहरों से रत्नागिरि में आकर नौकरी किया करते थे। बाद में शाम को यही ट्रेन पांच बजे वापस भी जाती थी। सो गाड़ी में से जितनी जल्दी लोग उतर नहीं पा रहे थे, उससे अधिक शीघ्रता से उसमें चढ़ने की कोेशिश कर रहे थे। अमलतास अभी तक यात्रियों की भागम-भाग और तत्परता को चुपचाप निश्चिंत बैठा हुआ निहार ही रहा था, कि तभी उसके कानों में एक मधुर और सुरीली आवाज़ सुनाई दी,

‘सुनिये। कृपया मेरा यह रूमाल अपने सामनेवाली सीट पर रख देंगें?’

अमलतास ने अचानक ही देखा तो, उसके सामने प्लेटफार्म पर एक एकहरे बदन की, गोरी साफ रंग की सुन्दर बाला उसी को निहार रही थी। अमलतास ने कहा तो कुछ नहीं, पर तुरन्त ही उस लड़की का रूमाल लेकर अपने सामनेवाली खाली सीट पर रख दिया। उस अनजान खुबसूरत लड़की की बैठने के लिये सीट का आरक्षण हो गया तो वह लड़की मुस्कराती हुई ट्रेन के दरवाज़े की तरफ चली गई। फिर शीघ्र ही अन्दर आई तो अमलतास ने रूमाल उठाकर उसके बैठने के लिये सीट खाली कर दी। वह लड़की मुस्कराती हुई, उससे ‘थैंक यू’ कहकर इत्मीनान से बैठकर

अपना रूमाल जो अभी तक अमलतास के हाथ में ही था वापस लेने की प्रतीक्षा करने लगी। बाद में अमलतास ने उसका रूमाल वापस कर दिया। इसके बाद दोनों में औपचारिक वार्त्ता हुई। दोनों ने एक दूसरे का नाम पूछा और यात्रा का कारण। वह लड़की जिसका नाम मीनल था, एक प्लास्टिक के पानी आदि के पाइप बनाने वाली कम्पनी में स्टेनोग्राफर के पद पर काम करती थी। वह दिन समाप्त हुआ। दूसरे दिन अमलतास को मीनल फिर से नीनापाटा के स्टेशन पर मिली, पर अमलतास ने उसकी सीट पहले ही से सुरक्षित कर रखी है, यह जानकर मीनल की खुशियों का ठिकाना नहीं रहा। बाद में धीरे-धीरे, प्रति दिन की मुलाकातों का परिणाम; दूरियां कम हुई। दोनों पास आये और फिर मीनल को अपना रूमाल अमलतास को देने की आवश्यकता नहीं रही। उसका स्थान अमलतास के दिल में सुरक्षित हो चुका था।

फिर दिन व्यतीत हुये। बहारें आईं। बारिशें धरती और मानव दोनों ही को भिगोकर चलीं गई। और इसके साथ ही अमलतास और मीनल भी अपने प्रेम की राहों पर चलते हुये भविष्य के सपने सजाने लगे। दोनों के दिलों के आंगन में भावी सपनों के ताजमहल तो बन रहे थे, परन्तु कितनी आश्चर्य की बात थी कि दोनों एक-दूसरे को तो भली-भांति जानते तो थे, पर कोई यह नहीं जानता था कि कौन कहां रहता है? उनके परिवारों की स्थिति क्या है? शायद इसका कारण भी यही था कि प्रेम की डगर पर चलने वाले केवल चलना जानते हैं, मंजिल और अंजाम क्या होगा? इसकी कोई भी परवाह नहीं करता है।

जहां मीनल का स्वभाव थोड़ा गंभीर था। कम बोलती थी, और बहुत ही अधिक अतिसंवेदनशील भी थी, वहीं अमलतास का स्वभाव छेड़खानी करने वाला और मज़ाकिया तरह का था। वह अक्सर ही मीनल को बातों-बातों में छेड़ता रहता था। मीनल कभी उससे नाराज होती थी, तो कभी बात करना बंद कर देती थी, पर जब भी उसका गुस्सा शांत हो जाता था तो वह फिर से सामान्य हो जाती थी। फिर एक दिन शनिवार को शाम को कायरलय से छुट्टी होने के बाद, अमलतास ने झींझ पर घूमने का कार्यक्रम बना लिया। यूं तो वे दोनों अक्सर ही झींझ पर चले जाया करते थे, लेकिन उस दिन मीनल का जन्म दिन था। अमलतास उसको जन्म दिन का उपहार भी देना चाहता था। सो इस अवसर के लिये झींझ का किनारा और एकान्त; इससे अच्छा स्थान और क्या हो सकता था। वैसे भी यह वह जगह थी, कि जहां पर आकर प्रेमी अक्सर ही एकान्त वातावरण का लाभ उठाकर अपने-अपने प्रेम की सच्ची-झूठी कसमें खाया करते थे। निश्चित समय पर दोनों झींझ पर पहुंच गये, और एक किनारे बैठकर दोनों झील के आस-पास के प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारने लगे। झींझ के किनारे दिनभर से धूप में तचते हुये मछुआरे अपनी रोजी-रोटी की आस में अपनी-अपनी बंसियां डाले हुये बैठे थे। हल्की-हल्की वायु की लहरों से झींझ का पानी जैसे थिरक रहा था। वातावरण में हांलाकि गर्मी तो थी परन्तु झींझ की लहरों से वायु के साथ नहाती हुई

हवाओं से जो ठंडक मिलती थी, उससे बदन को राहत भी मिल जाती थी। मीनल ने अपनी टांगें किनारे बैठकर झील के जल में डाल दी थीं। अमलतास भी उसी के पास बैठा हुआ दूर क्षितिज के किनारों को निहार था। तभी अमलतास ने अपनी जेब से मीनल का जन्म दिन का उपहार निकाला और फिर उसे देते हुये बोला,

'मीनल। आज तुम्हारा जन्म दिन है। बधाई हो। और यह छोटा सा उपहार मेरी तरफ से, पार्कर कम्पनी का बना हुआ पेन। तुम्हें पसंद है?'

'जब तुम पसंद हो तो तुम्हारी हर बात और हर चीज़ पसंद है।' कहते हुये मीनल ने अमलतास के कंधों पर अपने हाथ रख दिये।

'हो सकता है कि मेरा यहां से स्थानान्तरण हो जाये, और जब मैं यहां से चला जाऊं तो इसी पेन से तुम मुझको पत्र लिख दिया करना।'

'पत्र क्यों? आजकल तो ई-मेल और मोबाइल का जमाना है।' मीनल बोली तो अमलतास ने उसको उत्तर दिया। वह बोला,

'नहीं। ई-मेल मत करना।'

'क्यों?' मीनल ने उसे आश्चर्य से देखा।

'ई-मेल में तुम्हारे हाथ के नाख़ूनों की खुशबू नहीं होती है।'

'अच्छा यह तुम दार्शनिक कब से बन गये हो?'

'जब से तुम्हें देखा है।'

'और, ये तुम अपने लंबे बाल कब कटवाओगे? देखा, कितने खराब लगते हैं। लड़कियों की तरह बढ़ा रखे हैं?' मीनल ने उसके लंबे बालों को देखा तो टोक दिया।

'हां, लंबे तो हैं, लेकिन तुम्हारे बालों से ज्यादा लंबे तो नहीं।'

'मैं तो लड़की हूं।'

'इस जमाने में लड़के और लड़की में फर्क ही क्या नज़र आता है?'

‘भगवान ने जो लड़के और लड़की में अन्तर रखा है, उसके बारे में तुम्हें कुछ भी नहीं मालुम?’ मीनल ने पूछा तो अमलतास बोला,

‘इस बारे में तो मैंने कभी सोचा ही नहीं।’

‘नहीं सोचा है तो अब सोचना भी नहीं। तुम लड़कियों के समान रहो, मैं तो नारी हूं, फिर तुम्हारे पीछे क्यों पड़ूं।’

‘मेरे पीछे नहीं पड़ोगी तो फिर किसके पीछे जाओगी?’ अमलतास ने उसे छेड़ा तो मीनल को जैसे करैंट सा लगा। वह तुनक मिजाज़ में बोली,

‘बहुत हैंडसम समझते अपने आपको? सारी दुनियां में केवल एक तुम्हीं रह गये हो जैसे?’

‘मैं तो नहीं रह गया हूं, पर अमलतास का पेड़ भी हर जगह नहीं उगाया जा सकता है।’

‘तो मीनल का जन्म भी केवल एक बार ही होता है। कल अपने बाल कटवाकर आना। ज्यादा मुझसे छेड़खानी की तो मैं तुमसे फिर कभी नहीं बोलूंगी।’ मीनल ने अमलतास को चेतावनी दी तो वह उसे फिर से छेड़ता हुआ बोला,

‘नहीं बोलोगी तो तुम्हें चैन कैसे पड़ेगा?’

‘हां कभी भी नहीं बोलूंगी। ज्यादा हैरान किया तो इसी झींझ में डूबकर मर जाऊंगी। फिर सारी उम्र बैठकर यहीं रोते रहना मेरे लिये।’

‘अगर ऐसा हो जाये तो दो लफ्ज़ ज्यादा बोलूंगा धन्यवादी के अपनी दुआओं में।’

‘मेरे बारे में तुम्हारे ये विचार हैं? मैं जा रही हूं, और अब कभी भी नहीं आऊंगी तुम्हारे पास।’ सुबकते हुये मीनल उसका दिया हुआ उपहार उसी के सामने फेंककर चलने लगी तो अमलतास उसके पीछे भागा। भागते हुये बोला,

‘मीनल ठहरो तो। तुम तो बुरा मान गईं। मैं तो मज़ाक कर रहा था। अच्छा वादा किया अलूंगाब कभी नहीं बो इस प्रकार से तुमसे।’

लेकिन मीनल ज़रा भी नहीं रूकी। वह ना तो कुछ बोली और ना ही उसका गुस्सा शान्त हुआ। दोनों चुपचाप स्टेशन पर पहुंचे। गाड़ी आई तो दोनों चुपचाप बैठ गये। मीनल का स्टेशन

नीनापाटा आया तो वह चुपचाप अमलतास से कुछ भी कहे बगैर उतरकर चली गई। अमलतास मीनल की आदत जानता था। उसने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया। उसने सोचा था कि हमेशा की तरह मीनल जब सोमवार को आयेगी तो वह सामान्य दिखेगी और उसका गुस्सा भी जाता रहेगा। लेकिन, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सोमवार को मीनल सचमुच ही नहीं आई। नहीं आई तो अमलतास ने सोचा कि कोई काम लग गया होगा उसे। मगर जब वह दूसरे दिन भी नहीं आई तो अमलतास का चिन्तित होना बहुत स्वभाविक था। अमलतास और भी अधिक चिन्तित तब हो गया जब कि मीनल तीसरे और चौथे दिन भी नहीं आई। उसने उसके कार्यालय में जाकर पता लगाया तो वह सचमुच अपने काम पर नहीं आ रही थी और अपने ना आने का उसने कोई कारण या छुट्टी आदि भी नहीं ली थी।

पूरा सप्ताह अमलतास का इसी उहापोह में बीत गया। वह मीनल के बारे में चिन्तित हो गया। मीनल के पास मोबाइल भी नहीं था सो फोन से ही पता कर लेता। अमलतास ने मीनल की एक सप्ताह और प्रतीक्षा की। लेकिन जब वह नहीं आई तो आखिर में हार मान कर अमलतास ने मीनल के कार्यालय से उसके घर नीनापाटा का पता लिया और एक दिन उसको ढूंढता हुआ, उसके घर जा पहुंचा।

जिस समय अमलतास मीनल के घर पहुंचा तो सुबह के लगभग ग्यारह बज रहे थे। मीनल के घर के अधिकांश लोग अपने-अपने काम पर घर से निकल चुके थे। घर के बाहर और अन्दर भी जैसे किसी की उपस्थिति का ज़रा भी आभास तक नहीं होता था। अमलतास ने घर का दरवाज़ा खटखटाया तो काफी देर के बाद एक अधेड़ महिला ने धीरे से द्वार खोला। वह शायद मीनल की मां होगी? उसे देख कर अमलतास अपने मन में यह सब सोच ही रहा था कि तभी उसे गौर से देखते हुये उस महिला ने जैसे अपने मुख का स्वाद कड़वा करते हुये उससे कहा कि,

‘तुम अमलतास हो? मीनल के बारे में पता लगाने आये होगे?’

‘?’

अमलतास की आंखों में सहसा ही चमक आ गई। वह हां में अपना सिर हिलाता हुआ कुछ कहने ही जा रहा था कि तभी उस महिला का स्वर और कड़ा हो गया। वह अपने तेज स्वर में बोली कि,

‘किस्मत वाले हो। बहुत अच्छे समय पर आये हो। घर में इस समय कोई भी नहीं है। वरना तुम्हारी खैर नहीं थी।’

‘जी मैं कुछ समझा नहीं’ अमलतास आश्चर्य से उस महिला का चेहरा देखते हुये बोला।

‘नहीं समझे हो तो अब अच्छी तरह से समझ लो। मीनल अब तुमको कभी नहीं दिखेगी। तुम उससे विवाह करना चाहते थे? तुमने यह सब सोच कैसे लिया कि एक ईसाई लड़के के साथ हम हिन्दू लोग अपनी लड़की की शादी कर देंगे। वह तो मूरख है ही। तुमने भी उसे समझाने के बजाय गलत मार्ग पर ही चलने दिया?’

‘लेकिन मीनल है कहां?’

‘है कहां? वह डूब मरी झींझ में। हमने उससे तुम्हारी शादी के लिये मना कर दिया था, इसलिये वह जब काम पर गई तो फिर लौटकर वापस भी नहीं आई। कहती थी कि मैं डूब कर मर जाऊंगी, यदि मेरा विवाह अमलतास से नहीं हुआ। पुलिस में हमने रिपोर्ट तो लिखा दी है, लेकिन उसका कुछ पता नहीं चल पा रहा है। अब तुम्हारा भला इसी में है कि चुपचाप मीनल का नाम अपने दिल में से निकालकर वापस लौट जाओ, और फिर कभी इस तरफ का मुंह मत करना।’

अमलतास जैसे खड़े से ही गिर पड़ा। आज के इस युग में, अभी भी लोगों की वही पुरानी सोच है? उसने तो कभी सोचा तक नहीं था। प्यार की पहल तो पहले मीनल ने ही की थी। उसी ने तो उसे अपने पास खींचने के सारे प्रयास किये थे? लेकिन फिर भी...? सोचते हुये, अपने सीने पर पहाड़ सा बोझ धरे हुये अमलतास मूक बना, लुटालुटाया सा वापस आ गया। जैस-तैसे खुद को समझाने की चेष्टा की। नौकरी पर जाता तो काम से छुट्टी होते ही उदास मन से झींझ के किनारे बैठ जाता। बैठ कर मीनल के बारे में सोचता रहता। उसकी स्मृतियों को दोहराता रहता। मीनल की मां की कही बात एक दिन सच निकली। एक दिन पुलिस सचमुच झींझ के जल में कुछ ढूंढने का प्रयास कर रही थी। वह बैठा हुआ यह सब देख ही रहा था कि तभी पुलिस ने झींझ के गहरे जल से किसी युवती की क्षत्विक्षित् लाश बाहर निकाली। लाश इतनी सड़गल गई थी कि पहचानना आसान नहीं था। अमलतास ने जाकर देखा तो उसे मीनल की मां की कही हुई बात सच जान पड़ी। उसने सोचा कि यह क्षत्विक्षित लाश मीनल की ही होगी। काश: उसने यह सब करने से पहले उससे पूछ तो लिया होता? उसे अपने जीवन की यूं

आहुति देने की क्या आवश्यकता थी? यदि उसको अपने घर में कोई परेशानी, उसकी बजह से थी, तो वह खुद ही उसके मार्ग से हट जाता। वह इस प्रकार से उसके दिल और दिमाग पर एक अपराधबोध का कलंक लगाकर क्यों इस दुनियां से चली गई थी?

बाद में समय बीता, दिन आगे बढ़े तो अमलतास के दिल का बोझ भी हल्का होने लगा। हांलाकि, उसकी आंखो के आंसू बहना कम तो नहीं हुये थे, पर रोज़ाना चलने वाली हवाओं ने उन्हें किसी हद तक सुख़ा अवश्य दिया था। उसने अपने दिल की बात, अपने मन का दर्द किसी को नहीं बताया। चुपचाप यही सोचकर तसल्ली कर ली कि, राह चलते हुये अचानक ही उसे खुबसूरत फूलों का बाग मिला और उसने अपनी पसंद के कुछ फूल अपनी झोली में भर लिये थे, पर उसके नसीब की लकीरों ने उसके ये चुने हुये सुन्दर फूल, उसकी .जिन्दगी के सदा चुभने वाले कांटों में बदल दिये थे। मीनल उसके जीवन में एक सुन्दर भावी सपना लेकर प्रवृष्टि हुई थी, पर जमाने ने उसके इस सपने पर अपनी कमज़ोरियों का काला रंग पोत दिया था। अमलतास ने यह सब सोचकर सब्र कर लिया था। एक प्रकार से खुद को समझा भी लिया था, पर आज जब उसने अचानक से मीनल को जीवित देखा तो उसके दिल पर गाज़ गिरनी बहुत आवश्यक थी। अपनी .जिन्दगी के इस हसीन और फरेबी धोख़े को वह किस प्रकार बर्दाश्त कर सकता था?

सोचते हुये अमलतास की आंखों के समक्ष अंधकार छा गया। एक गैर-मसीह लड़की ने उसके साथ अपने प्यार के पग बढ़ाये थे, लेकिन जब उसके सामने अपने परिवार की मर्यादा, और सम्मान की बात आई तो कितनी खुबसूरती से वह उससे किनारा भी कर गई? मगर मीनल के स्थान पर यदि किसी मसीही लड़की की ऐसी प्यार की कहानी होती तो? सोचते हुये अमलतास अपने स्थान से उठ गया। वह समझ चुका था। जमाने की रीति, जालिम लड़कियों के प्यार की परिभाषा, और प्यार के खेल में मिले हुये उस उपहार को कि जिसे ना तो वह अब अपने पास ही रख सकता था और ना ही किसी को दिखा सकता था। अपने जीवन की दोनों ही महत्वपूर्ण वस्तुओं को उसने खो दिया था; एक अपना प्यार मीनल और दूसरा प्यार के विश्वास को भी। वह समझ नहीं पा रहा था कि अब वह अपनी दुआ में दो लफ्ज़ धन्यवादी के पढ़े या फिर अपनी चोट की राहत के लिये?

एक बार उसने फिर कर झींझ की तरफ देखा, झींझ का नादान सा पानी हल्के-हल्के हिलकर इशारों में ही उसे जैसे अपना अंतिम नमस्कार कर रहा था। वह अब यहां फिर कभी नहीं आयेगा। फिर आयेगा भी क्यों? इसी झील के जल में तो उसके सारे सपने डूब कर बह चुके थे।

समाप्त.